॥ श्रीज्ञान कान्ति ॥

तीन तत्त्व तर पीन भीन रस झीन सुमति रति माने ।
जैसे मिष्ट इष्ट रस अंतर मीन लीनता ठाने ॥
एक तत्व जे वदत वाद वल यद्वाद्वैत प्रमाने ।
युगलअनन्यशरन समुझै ते तीनो तहाँ समाने ॥ १ ॥
जीव ईश अरु प्रकृति विलच्छन लच्छन स्वरूप बखानो ।
जो जाने सो तरे महा भव सागर सुदृढ़ पछानो ॥
विना ज्ञान त्रय तत्व सत्व सुख सपनेहुँ सार न आनो ।
ताते युगलअनन्य भेद भल वदत शौक सरसानो ॥ २ ॥

प्रथमहिं प्रकृति तत्व वरनो पुनि जीव ईश भल भेदा।
माया अमित भाँति जानो जिय शुचि अरु असुचि सखेदा॥
जीव पांच विधि वद्ध आदि तिमि ईश विधान सुमेधा।
युगलअनन्यशरन रहस्य त्रय रहस विवेकी वेधा॥३॥
भूमि नीर तिमि तेज पवन आकाश पाँच ये जानो।
शब्द स्पर्श रूप रस सुंदर गंध पाँच पहचानो॥
श्रवन त्वचा दृग नाक जीह वर वदन पानि अनुमानो।
चरन शिष्न मलद्वार सहित दश इन्द्री प्रगट वखानो॥४॥
मन मति चित अभिमान चार जुत चौविश तत्व विचारो।
अचिद् रूप गुन तीन सहित जड़ सब संघात निहारो॥
इनको लिये विचित्र असत सत कारन प्रकृति सुधारो।
युगलअनन्यशरन साँची संतत ताको निरधारो॥५॥
कारन रूपा जौन प्रकृति तेहि जन्म विनाश नहीं है।
मिथ्या वचन वदत वेनाहक बुधि वहु वाद गही है॥
कारज विलय होत संशय विन प्रलय मांझ सु सही है।
युगलअनन्य ईश सत्ता कहुं प्यारे पृथक लही है॥६॥
परम परेश शक्ति अनुपम नहिं वचन सु मन में आती है।
श्रीसीता स्वामिनी अंश सब भाँति प्रशंस लखाती है॥
जाकी कला कटाक्ष कलित सब लोक अशोक विभाती है।
युगलअनन्यशरन सियवर सुख सौगुन दिल दरशाती है॥७॥
विद्या अपर अविद्या द्वै तेहि शक्ति विवेकी भाषे हैं।
सियवर विमुख तथा सनमुख जुग जनित सतत फल चाषे हैं॥

सीतावर शुचि शक्ति सामरथ सकल लोक दुति राषे हैं।
युगलअनन्य विचार हीन तेहि उपर नाहक माषे हैं ॥ ८ ॥
जो कुछ सुनिय गुनिय सो सब सद शक्ति समेत सुजानोगे।
ताके मध्य भेद नाना सो सतगुरु किये पछानोगे ॥
मत अद्वैत बीच माया विन जगत कौन विधि मानोगे।
युगलअनन्यशरन सब मत मधि शक्ति नित्यता ठानोगे ॥ ९ ॥
अजा अनादि एक अनुभव गति गम्या वेद वखानी है।
शक्तिमान शक्ती अंतर नहिं भेद रंचहूँ आनी है ॥
अपने मनहूँ से विचारने योग इह अकथ कहानी है।
युगलअनन्य अचेतन चेतन उभय झलक झलकानी है ॥ १० ॥
श्रीसीतावल्लभ सु शक्ति को सदा वंदिनिये प्यारे।
तिसहीं के करुणा कटाक्ष से सुलभ होत सुख सारे ॥
प्रभु प्रतिकूल पदारथ जो सो निंदन योग सवारे।
युगलअनन्यशरन वरन्यो गुन प्रकृति कछुक दुति धारे ॥ ११ ॥
जीव स्वरूप अनूप श्रवन सुचि करो परिहरो वादू।
निर्विकार संसार भार गत नित्य निचित अनादू ॥
सत चित मोद लिये निशदिन नहिं यामें रंच विवादू।
युगलअनन्यशरन अज अव्यय अमन निरूपत नादू ॥ १२ ॥
सुन्दर सरस रूप सीतापति सेवा योग सोहावन।
सदा नियम्य ज्ञान गुन मंडित खंडित खेद सुपावन ॥
श्रीजानकि जीवन प्रीतम प्रिय अंश प्रशंस सुभावन।
युगलअनन्यशरन माया मन मिलित लखात अपावन ॥ १३ ॥

संतत शान्त भ्रान्त तम गम विन अस महीन दुति राशी।
सिय वल्लभ आधीन अनूप न समुझै सुबुधि विलाशी॥
दिव्य नित्य परिकर समता संदेह रहित भल भासी।
युगलअनन्यशरन सीतावर सुमिरत शुद्ध सुवाशी॥१४॥
बद्ध मुमुक्षू मुक्त आदि जो सात पाँच विधि भाषी।
सो अनित्य रस एक रहत नहिं कछु दिन श्रुति सद साषी॥
सदा अबंध नहीं याको भ्रम अंतर खेद सुराषी।
युगलअनन्यशरन सुन्दर मनि मलिन जाति सम लाषी।१५॥
सियवर विमुख अनादि काल से भ्रमत विकारन मांहीं।
विना विचार विशेष वेदना सहत हमेश सुचाही।
है परन्तु सम नित्य निहारे निर्विवाद समताही।
युगलअनन्यशरन स्वरूप निज समुझो सजन सुराही॥१६॥
सेवो सानुकूल सीतापति सतगुरु संत सुहेलों को।
तजो तीन तन तार मार मन जानो दमन दुहेलों को॥
होय एकान्त शांत संतत रिझवो हरि अलवेलों को।
युगलअनन्य सुसंग सजो क्या मतलव चलन चुहेलों को॥१७॥
सियवल्लभ सर्वेश सिरोमनि सरस स्वरूप सुनीजे।
मन मति करि एकान्त शांत गुन निधि गुन सतत गुनीजे॥
वार वार वलिहार करत मुद मोद महा रस पीजे।
युगलअनन्यशरन संतत सुख सहित जुगन युग जीजे॥१८॥
सकल ईश सिरताज सरस सत चित घन मोद सुसागर।
एक अखण्ड अनूप अजब अज अमल अजूब उजागर॥

विधि हरिहर शत सहस सेव्य निज नेह निवाहन नागर।
युगलअनन्यशरन जाको जस लोक कदंब प्रभागर ॥१६॥
नित्य निरीह सकल मधि व्यापक तापक विमुख वहाना।
अकल अतर्क अर्क कोटिन कल कांति वपुष सुख खाना॥
नित नूतन नाज़ुक निरोग निज निरमल नेह खजाना।
गुनातीति रस रीति प्रवोधक युगलअनन्य सुजाना ॥२०॥
सत चित मोद मूल मंगल प्रद असद वासना नाशक है।
पोषक जीव चराचर नायक रघुनायक संकाशक है॥
सगुन अनन्त संत सुरसेवित शिक्षक काल प्रभासक है।
युगलअनन्यशरन स्वतन्त्रतर प्रवल ईश गन शासक है ॥२१॥
श्रीभू लीलादिक पतनी प्रिय प्यारी जनक किशोरी।
अमित नायिका वृन्द रमत रुचि सुचि अनुकूल सुजोरी॥
दिव्य भव्य लावन्य सुधा निधि नवल अंग चित चोरी।
युगलअनन्य असंख्य अमल गुन मंडित प्रीति न थोरी ॥२२॥
रशिक अनन्य प्रान जीवन धन अद्‌भुत प्रेम प्रभाकर।
मन मोहन सुचि सुख संदोहन संतत स्वाद सुधाकर॥
अति अनुकूल शूलहारी पन अधन सुधन करुनाकर।
युगलअनन्य जानकी जीवन सकल भाँति सुखमाकर ॥२३॥
शेष शारदा श्रुति शुक शौनक सनकादिक गुन गायक।
औरहुं अमित मुनीश कुम्भ सम्भव सुजान सुष दायक॥
अवतारी अवतार सुरंजन सज्जन सदा सहायक।
युगलअनन्यशरन सर्वोपर प्रीतम सिय रघुनायक ॥२४॥

तीन तत्व सत श्रुतिन सार सब भाँति परत्व प्रकाश्यो ।
नाना मत सत असत वाद वल्लभ तेहि विलग निकाश्यो ॥
सदा सुचित्त सावधानी सजि सरस सरोज विकाश्यो ।
युगलअनन्यशरन सतसंगति पाय परम सुष भास्यो ॥२५॥
आदिहिं श्रीगुरुदेव शरन दृढ़ करि विश्वास सम्हारे ।
ता पीछे परतीत नाम श्रीधाम मनोहर धारे ॥
इसके वाद नवल मूरति निज नैनन नित्य निहारे ।
युगलअनन्यशरन सुन्दर पथ चलत न सपनेहुं हारे ॥२६॥
दिव्य दशा आवेश रूप निज सहित परेश सम्हारन है ।
भीम भास दृढ़ रीति श्रवन करि शंतत हृदय विचारन है ॥
दाम व्याल कट निपट सु खटपट ताको सहज विसारन है ।
युगलअनन्यशरन हरसायत गुरु पद रज सिर धारन है ॥२७॥
केवल वँध्यो वासना जुत जिय शुद्ध स्वरूप विसारी ।
जैसे कोशकार मर्कट शुक मृषा कैद पन धारी ।
विना विवेक हारि तेरो नित जीत विवेक विचारी ।
युगलअनन्यशरन इच्छा करनी तजि सदा सुषारी ॥२८॥
सम संतोष विचार सरस सतसंग अंग ए चारी ।
निज निर्वान अमल गोपुर परिपालक अति अविकारी ॥
इनके रूप अनूप मोद प्रद श्रुति सिद्धान्त प्रचारी ।
युगलअनन्यशरन एकहुं दृढ़ चारो फलद निहारी ॥२९॥
प्रानायाम करै अविचल चित प्रथम साधना साधी ।
वहुरि वासना याम विचारे करि सुचि सहज समाधी ॥

दोनों सधे मनो नाशन प्रिय रूप प्रकाश अबाधी।
युगलअनन्यशरन साबित रहु गहु गुरु ज्ञान अनाधी ॥३०॥
तूँ चैतन्य चारु सच्चिन्मय मोद स्वरूप सदाई।
जड़ अज्ञान संग तेरो नहिं चहिये प्रीति सगाई॥
द्विजवर चर्मकार वामा रति करत न लाज लजाई।
युगलअनन्यशरन अन्तर मुद लीजे ललित ललाई ॥३१॥
सद् ग्रन्थन आसय अगाध निधि तहाँ जाय जब पैठे।
सत मत सार वस्तु ग्राही तिनके समीप मिलि बैठे॥
काल कराल काम काफिर खल तिन दिशि सें नित ऐंठे।
युगलअनन्यशरन शीतल उर भयो मिट्यो तप जैठे ॥३२॥
निरालम्ब अवलम्ब रहित तहँ चित्त सुचाह चढ़ावै।
विगत विलम्ब अदम्भ भजन आनन्द सिन्धु उमगावै॥
निज अभिलाष बिहाय अनिच्छित भोग विभूति भोगावै।
युगलअनन्यशरन तन संयुत परम धाम मुद पावै ॥३३॥
सुधा सार सम सुगम सोहावन सरस सीयवर सेवा।
सों शुभ वर विज्ञान सुफल भल मधुर मनोहर मेवा॥
जिनको नाम प्रताप प्रवल सब ईश इष्ट प्रिय देवा।
युगलअनन्यशरन जीवन धन पाय न काल कलेवा ॥३४॥
श्रीरघुवंश विभूषन गुन रस रमन करे जब जीवा।
रहे न ताप कलाप दाप दुख पावे मोद अतीवा॥
भूले निज पर कुमति कसर कुल कुल फत कलक कलीवा।
युगलअनन्यशरन शरनागत सजत स्वाद सुख सीवा ॥३५॥

श्रीरघुवीर किंकरी कामिनि कलह प्रिया जड़ माया ।
जाकी कला विरंचि महा मुनि नारद नाच नचाया ॥
ज्यों ज्यों दूर जात छोड़े अभिमान जान जुत जाया ।
युगलअनन्यशरन त्यों त्यों उह पीछे ज्यों तन छाया ॥३६॥
है जाकी दासी ताही के शरन जीव जब जावै ।
कपट विकल्प रचे नहिं रंचक पाहि पाहि मोहरावै ॥
तब करुना सागर बोलाय तेहि नैन कोर दरसावै ।
युगलअनन्यशरन संशय बिन तब जिय छूटन पावै ॥३७॥
इच्छा करनी कठिन वड़ी बन तन विच वसती प्यारे ।
नाना काम कलंक रूप तृन चरे मोद मन धारे ॥
सपनेहूँ न अघात पेट भरि तीन लोक लै डारे ।
युगलअनन्यशरन इन्द्रीगन शिशु समूह अति भारे ॥३८॥
मन निकुंज निज सदन सोहावन पाप पुन्य रद भारी ।
दोरे राग द्वेष मद संयुत महा विषम गति धारी ॥
देहादिक दृग सत्य सोई संग्राम भूमि का कारी ।
युगलअनन्यशरन जीतत उह सप्त भूमि लौं नारी ॥३९॥
कृपिन जीव की कौन कथा जहँ ज्ञान मान मथ डारे ।
विगत प्रमाद रहे चेतन तौ सपन माँझ नहिं हारे ॥
सुर नर मुनिन विजय किन्हीं जे झीन वासना वारे ।
युगलअनन्यशरन हरसायत कृपा आस अव धारे ॥४०॥
इहाँ चित्त वासना बहु विधि संकल्पादि मलीना ।
माया मूल अविद्या प्रभु पद विमुख नाम तेहि कीना ॥

सूक्षम विना विवेक नेक नहिं माने वदहिं प्रवीना।
युगलअनन्यशरन संतत हुशियारी समुझि सबीना ॥४१॥
सप्त भूमिका अदृढ़ जहाँ लौ प्रौढ़ यथारथ नाहीं।
तौ लौ रहे अवस खटका उह करनी महा कुराही॥
जौन समे दृढ़ता पाई प्रभु कृपा समेत सुवाही।
युगलअनन्यशरन शंका विन उर प्रमोद उमगाही ॥४२॥
अहं प्रवाह दाह दायक तजि जब सम भाव प्रकाशे।
जड़ता चित्त उपाधि व्याधि भव मूल विशेषि विनाशे॥
तुरिया ताहि कहें संतत सव संत विवेक विलासे।
युगलअनन्यशरन सीतापति तुरिया तीन निवासे ॥४३॥
मन मति मादकता मनोज की षोज जहाँ नहिं दरसे।
स्वयं प्रकाशमान रवि शशि गति हीन जहां सुष सरसे॥
विधि हरिहर छीरेशर मा वैकुण्ठ सुपति पद परसे।
युगलअनन्यशरन सियवर कल कृपा पाय रस वरसे ॥४४॥
योगी ज्ञानी ध्यानी भटकत फटकत तुष निज ज्ञाना।
मन वच पार वस्तु भासे नहिं वकत आन की ताना॥
श्रीगुरु संत इष्ट महरम विन लषे न वर विज्ञाना।
युगलअनन्यशरन तुरिया ते परे पदारथ जाना ॥४५॥
कृपा कटाक्ष कोर कारन बिन परम तत्व नहिं दीशे।
चाहे कल्प कोटि कल्पित मन विविधि पीसना पीशे॥
चौबिश पंच वीस षट विंशति सप्त विंश पर ईशे।
युगलअनन्यशरन सर्वोपरि सियवर विश्वा वीशे ॥४६॥

मोह तरंग कुरंग देह मधि उठ्यो कौन विधि सोधे।
अहंकार पुनि उदय होत केहि इहै विवेक सुवोधे॥
करन कदम्ब शरीर सहित मन वशी भाव जड़ ओधे।
युगलअनन्यशरन मनहूँ जड़ बुद्धि अधीन निरोधे॥४७॥
बुद्धिहुं अहंकार वस श्रुति मत संत विवेकी भाषें।
सो जड़ चेतन विभव लेश वल बिविधि वासनी चाषें॥
पवनहुँ चेतन कला कलित करि सजग समीहा राषे।
युगलअनन्यशरन सर्वोपरि रूप सार अभिलाषे॥४८॥
जैसे उभय चन्द दीशे नभ दूर देश दृग झाँई।
ऐसे सकल करन मन बुधि भ्रम दुख सुख प्रगट लखाई॥
ज्यों बालक वेताल खेद कर मृषा न सत्य कदाई।
युगलअनन्यशरन संतन मत विश्व झूठ दरसाई॥४९॥
कल्पित आरोपित प्रतिभासक त्रिविध भरम भव भासे।
वन्ध्या सुवन साप रसना मधि मृग जल तैसेहिं आसे॥
वस्तु वास्तव बोध विना बहुधा परपंच प्रकाशे।
युगलअनन्य सुवोध भये पर रंच न कतहूँ वासे॥५०॥
कासे कहों कौन माने निज पर स्वरूप ज्यों झलके।
सती सनेह भरी प्रीतम संग जरी कहे क्या खलके॥
ज्यों गूंगे को सपन वाम सुष सेज न वानी वलके।
युगलअनन्यशरन याते शत सहस स्वाद लय ललके॥५१॥
सगुन अगुन ते पार पीय परमेश तत्व गुन न्यारा है।
क्यों जाने ताको मलीन मन पचे प्रपंच अचारा है॥

जाकी गति रतिहूँ न लही विधि शंकर विष्णु विचारा है।
युगलअनन्यशरन करुना से लहत सुजन अधिकारा है ॥५२॥
मन की गम लौं गमन करें ज्ञानी पुनि नेति वषाने।
कृपा सहाय विना चिद्घन वपु परचे परष न जाने ॥
पांचो रहित सहित छठ्यों तन अनुभव पार प्रमाने।
युगलअनन्यशरन सियवल्लभ कृपा कलित गहि छाने ॥५३॥
प्रभा जनित आनन्द एक जो विशद ज्ञान श्रुति वानी।
दूजी दुति प्रतिभास मोद सो सार रहित सम जानी ॥
तीजी परम विचित्र अगोचर रूप विनोद प्रमानी।
युगलअनन्यशरन याही मधि सकल प्रकाश समानी ॥५४॥
मन मतंग गति तीन पीन मति भेद समेत विचारें।
जागृत मांझ घोर घायल घन सदृश उपाधि प्रचारें ॥
शांत लिये सपने अन्तर तिमि विविधि विलाश पसारे।
युगलअनन्यशरन मद्यप सम मूढ सुषोपति प्यारे ॥५५॥
तीनों रीत रहित सोई मन मृतक संत सद सोहैं।
पुनि तीनों को योग शोग विन तुरी महा मुनि जोहैं ॥
निज निर्वान प्रधान प्रशंसित सुन्दर तन मन मोहैं।
युगलअनन्यशरन राघव गुन अगुन गनत मुद दोहैं ॥५६॥
राग रसातल स्वर्ग मृत्यु को भोग सुचित सोहावै।
ताको तजे अराग महोदधि मुक्ति महान समावै ॥
निज सुभाव जड़ संग जीति पुनि इन्द्रिन विजय करावै।
युगलअनन्यशरन श्रम दिन लघु अभय अजय पद पावै ॥५७॥

जेहि दिन छिन चित गरक ज्ञान गुरु गेय होय तजि जाला।
सोई घड़ी भरी मंगल मन मौन मुक्त मुद माला ॥
जैनी कर्म लीन भाषे कहुँ मुक्ति सिला सुष साला।
युगलअनन्यशरन झूठी कलि कथनी कलिल कसाला ॥५८॥
करे कुकर्म कोटि भोजन हित त्यागि लोक कुल काना।
केवल ज्ञान वचन से भाषे धरि बहु वेष विधाना ॥
आग लगी तन मन वानी में मिथ्या मद मुद माना।
युगलअनन्यशरन सुष सौभग दुर्लभ तिन्हहिं बखाना ॥५९॥
ज्ञान बन्ध मति अंध जीव जड़ता ते अज्ञ विशेषी।
पढ़े वेद वेदान्त जीविका हेत सनेह परेषी ॥
सिलपी सम सत शास्त्र अधिक अध्ययन कियो अनिमेषी।
युगलअनन्यशरन पांवर नर तिनसों भेद न देषी ॥६०॥
खान पान सनमान दाम नृप सभा प्रवेश बखाने।
माने महा मोद जीवन निज सफल अविद्या स्याने ॥
वदें वाद बिद्या बहुधा पढ़ि वस्तु बिचित्र भुलाने।
युगलअनन्यशरन माते मद मोह कीच लपटाने ॥६१॥
तीन लोक में जीव सात विधि वरनहिं सुमति सयाने।
स्वप्न जागरक प्रथम द्वितिय संकल्प जागरक जाने ॥
तीजे जीव जागरित केवल संत समूह प्रमाने।
युगलअनन्यशरन चौथो चिर जागृत दशा समाने ॥६२॥
घन जागृत पांचवों व्रिलच्छन जागृत स्वप्न गनाये।
सप्तम छीन जागरक सुन्दर संत संहिता गाये ॥

इनते पृथक न विश्व वीच कछु अपर दृष्टि मधि आये।
युगलअनन्यशरन राघव गुन बिभव अंश सें ज्याये ॥६३॥
सैन करे दिन रैन असन हित उठे कहूँ दृग मीचे।
पुनि सोवे बेहोश सपन में जागृत दशा सु सींचे ॥
दुख सुख हानि लाभ सोवत सब लहै भरे भ्रम कीचे।
युगलअनन्यशरन तेई नर स्वप्न जागरक नीचे ॥६४॥
ज्ञानिन मत मधि जगत सपन समता मधि जागत जोई।
सोऊ सपन जागरक उत्तम समुझि सुखद भल होई ॥
तन त्यागन के समे करे संकल्प जौन जिय गोई।
युगलअनन्यशरन सांचो संकल्प जागरक सोई ॥६५॥
देह रहे भर सैन हीन संकल्प सहित सब पावै।
सोउ संकल्प जागरक सत मत सुमत भेद दरसावै ॥
प्रथम सृष्टि में भये जीव निर्वाशिक जौन सोहावै।
ते केवल जागृत दुख सुख बिन रीति अनन्य लषावै ॥६६॥
सोइ जन अमित जन्म पाये पर रहे शुद्ध अबिकारी।
तेई चिर जागरक बिलच्छन मोद अनूपम धारी ॥
छन जागृत पाषान पशू सम भजन बिवेक बिसारी।
शीत घाम बरषा नाना सहि युगल अनन्य दुषारी ॥६७॥
सप्त प्रकार अवस्था सुचि गुन अशुचि समेत बषान्यो।
इनहीं माँह मगन ज्ञानी अज्ञानी मरम पछान्यो ॥
सात पार निज नित्य निरामय परिकर पगट प्रमान्यो।
युगलअनन्यशरन सीतापति सुमिरन सुमति समान्यो ॥६८॥

मलिन वासना त्यागि संत गुरु शास्त्र श्रवन के कीने।
जे जन लहे ज्ञान निज पर कछु बिषय वासना हीने॥
जागृत जगत रूपन समता गुनि ज्ञान नीर मन मीने।
युगलअनन्यशरन तेई अधिकारी नेह नवीने॥६९॥
पहुँचे जाय भूमि सप्तम लौं देह गेह भ्रम टारी।
ते जन बड़भागी उदार वर छीन जागरक भारी॥
समता मई भई मूरति सब राग द्वेष दल दारी।
युगलअनन्यशरन सावित सुख सदन गये दुख डारी॥७०॥
सप्त प्रकार जीव उत्तम लघु मध्यम वरनि सुनाये।
करत विचार विकार रहे नहिं महा मुनिन मुख गाये॥
बाहर दृग प्रथमहिं अंतर करि बहुरि खोलि छवि छाये।
युगलअनन्यशरन दरशन दृग दृश्य उपाधि भुलाये॥७१॥
उभय प्रकार भेद मुनि जन मधि संत पारखी गावैं।
एक कष्ट करि कठिन करन गन जीतत मोद न पावैं॥
एक विवेक लिये साधत सब काय कलेश नशावैं।
युगलअनन्यशरन उत्तम गति ज्ञान समेत सोहावैं॥७२॥
जौ लौं करन द्वार मूंदत नहिं तौ लौं प्रभा न भासे।
जैसे कुंभ दीप अंतर पर छिद्र राह संकासे॥
बिना बंद कीन्हें प्रमोद नहिं श्रुति सत मत शुचि आसे।
युगलअनन्यशरन इन्द्रिन को कैद किये रस रासे॥७३॥
मन संकल्प बिकल्प प्रकाशत चित्त विषै रस ध्यावैं।
निरचय दृढ़ अध्यास बुद्धि गुन अहं अहंता भावै॥

चारो बड़े कलहकारी इन मिले जीव दुख पावै।
युगलअनन्य अदाग बोध बिन ये नहिं संगत जावै॥७४॥
अन्तः करन उपाधि संग सजि जीव जाल जग उरझै।
साधन अमित अबोध सहित करि तीन काल नहिं सुरझै॥
बार-बार बहु ब्यथा बहे पर गहे न गुरु पद मुरझै।
युगलअनन्यशरन मूरख पन सहित अहित पद पुरझै॥७५॥
सांचो संत सिरोमनि सो जो इन्हें जीति जस लीन्हों।
तिनके सम को शूर बीर रनधीर विजय बड़ कीन्हों॥
निज पररूप अनूप चारुचित चामीकर बिच चीन्हों।
युगलअनन्यशरन धन-धन प्रभु हेत शीश जिन दीन्हों॥७६॥
सूक्ष्म ज्ञान देश साधन अनुपाधन वरनि सुनावो।
सुनो श्रवन मन मनन सहित पुनि अंतरंग सरसावो॥
ज्ञान भक्ति विज्ञान विभव दुति देश एक लखि पावो।
युगलअनन्य संत करुना से फेर न इह भव आवो॥७७॥
पंद्रह अंग असंग ज्ञान गुन तीन पार हिय लावो।
यम युत नेम मूल बंधन निज आसन मरम समावो॥
मौन वपुष सम सजे सुभग पुनि प्रानायाम कमावो।
युगलअनन्यशरन साचित ह्वै प्रत्याहार जमावो॥७८॥
धीर धुरीन धारना धरि पुनि ध्यान समाधि निहारे।
देश काल नाशिका विलोकनि सारासार विचारे॥
राज योग अनुकूल रहस दृढ़ अर्थ अनूप सम्हारे।
युगलअनन्यशरन हठ योगज संकट दूर निवारे॥७९॥

यम जीवन धन इष्ट मिष्ट गुन गगन गुमान गँवाये।
नेम नाह रस रहित सकल सुख नीम अफीम सवाये॥
मूल बंध मुद मूल नाम रुचि शुचि अनुराग छवाये।
युगलअनन्यशरन आसन अनमोल सुथल लव लाये॥८०॥
मौन मानसिक मोह मदन मन राज कुसाज नसाये।
स्वच्छ शरीर सार अनुभव वपु समता सर सरसाये॥
प्रीतम पर प्रिय प्रान निछावर प्रानायाम सजाये।
युगलअनन्यशरन इह सम नहिं प्रान निरोध मजाये॥८१॥
प्रत्याहार अधार रहस रसधार अपार विलच्छन।
सकल विषय व्यवहार निरस करि पावो प्रभा प्रतच्छन॥
सीताराम मयी नख सिख सुचि धवल धारना रच्छन।
युगलअनन्य अनन्य महाव्रत धीर धारना लच्छन॥८२।
सेवे अवध देश सुख सागर सकल कलेश प्रहारी।
अपर भदेश देश त्यागे गहि अनुपम देश खरारी॥
देस सार सतसंग रंग तिमि काल भजन अनुहारी।
युगलअनन्य सुकाल सोई जब सुमिरन अवध विहारी॥८३॥
नेह नाशिका नित्य निहारत रहे नीत निज जोहे।
इत उत ते दृग खैंचि भली विधि सपनेहुँ कतहुँ न मोहे॥
सार सियावल्लभ स्वरूप भजि तजि असार अवरोहें।
युगलअनन्य श्याम सुन्दर बिन अखिल असार निगोहें॥८४॥
युगल किशोर चोर चित चितन चारु चरित वसुजामी।
अंग-अंग अवलोकि मगन मन होय रहे आरामी॥

हास विलास विहार विभव वर ध्यावे परे न स्वामी ।
युगलअनन्य ध्यान अनुपम अनुराग गम्य निष्कामी ॥८५॥
सरस स्वाद सागर संतत सब भाँति समाधि सोहावन है ।
ध्याता ध्यान ध्येय सुधि बुधि जहँ नेक नहीं दरसावन है ॥
मन वानी से पार प्रेम पति प्रचुर तौन थल पावन है ।
युगलअनन्यशरन केवल छवि झलक न पलक लगावन है ॥८६॥
ध्याता ध्यान ध्येय तीनों परभानन हिय के माँहीं ।
अखिल पदारथ शून्य तहाँ रस रूप चमक चमकाहीं ॥
योगी ज्ञानी देस दमक कुछ लेस रहस रमकांहीं ।
युगलअनन्यशरन समाधि सुभ लच्छन अलख कहाहीं ॥८७॥
विविध वरन हिय हरन विन्दु ते प्रगटत लखत प्रवीना ।
रहत लीन पुनि पीन विन्दु तहँ अतिशय अनु गुन भीना ॥
तैसेहीं अग जग स्वरूप पर ते संभवत प्रवीना ।
युगलअनन्यशरन तामे परमेश लखत वरवीना ॥८८॥
ऐन वरन सम सरस चैन जुत विन्दु गैन कहवावै ।
ऐसेहीं वासना वृन्द संयुक्त जीव पद पावै ॥
जौ लौ बनी वासना रंचक तौ लौं खेद कमावै ।
युगलअनन्य वासना वरजित विभौ त्रिलच्छन छावै ॥८९॥
जनक अनूपम पद सद मति बिनु विसरि गयो सब काहूँ ।
सुवन सनेह सने सुख जस लखि वोध विगति सहि दाहू ॥
जो छोड़त तेहि अग्रगन्य पुनि होत न भिन्न निबाहू ।
युगलअनन्यशरन सीतावर सुमिरत सहज पनाहूँ ॥९०॥

सेवत शुक सेमर सठ हठ वस लखत न सार असारू।
जैसे मूढ अरूढ साख कहँ काटत कठिन कुठारू॥
यथा मोह ममता परबस कोउ नाशत शीश अधारू।
युगलअनन्यशरन तैसे मन विरचित अमित पसारू॥६१॥
प्रायश्चित्त चित्त सोधन हित एक अनूप बताऊँ।
जो कोउ करे सनेम प्रेम सों पावै अविचल ठाऊँ॥
सब सन निरस होय सीतापति शरन आस सरसाऊँ।
युगलअनन्यशरन सीमा सत शर्म गुह्यगुन गाऊँ॥६२॥
भूलो भव वन भाव भावना फूलो सुफल फलाये।
सदा सानुकूलो सियवर रुचि सहित समेत सलाये॥
पलहूँ नहिं हूजे प्रतिकूलो याही मांझ भलाये।
युगलअनन्यशरन मंगल जग जालिम जुलम जलाये॥६३॥
धर्म कर्म विधि बाद महाबन जैमिन मति अनुकूला।
काम कलंक सुजस ऐहिक सब काव्य अलंकृत मूला॥
धर्म शास्त्र शम दम उपाय बहु बरनत श्रुति समतूला।
युगलअनन्यशरन कोऊ जम नेम भने विन सूला॥६४॥
व्रत उपवास विभव साधन कोउ करे निरूपन न्यारे।
यज्ञ दान तप सत्य वचन निज कोउ सिद्धान्त प्रचारे॥
यतन अनंत मुक्ति कारन पै मम हिय रुचत न प्यारे।
युगलअनन्य विना निर्मल निर्वेद भजन श्रम भारे॥६५॥
सातो ऊरध अर्ध सात सुख विषय अंत सब झूठे।
अलप बहुत दिन बीच मोद सो सत मत अंतर जूठे॥

राग द्वेष इरखा मत्सर की खानि नाक सुनि रूठे।
युगलअनन्यशरन उज्ज्वल वर विरति विशेष अनूठे ॥९६॥
देह गेह नश्वर समाज सब संतत श्रुति सदवानी।
ता हित रचत अनेक जतन जड़ जीवन जात ज़ुदानी ॥
बड़े बड़े वैभव वालन की सुनियत अकथ कहानी।
युगलअनन्यशरन विराग वर बोध सहित सुख प्रानी ॥९७॥
छेदे सकल काल कल्पित कुल काम बासना बारी।
भेदे आस भार भव भय भल मोह मान मद मारी ॥
खेदे खलक खाम खाहिस खल नाचे दे तरतारी।
युगलअनन्य बोध वेगम वैराग्य धारना धारी ॥९८॥
जैसे पंथी पंथ चलत पथ मांझ सराय निहारी।
कियो रैन विश्राम थकावन मिटन हेत अविकारी ॥
जाम शेष निशि से चेतन ह्वै गमनत भयो बिचारी।
युगलअनन्यशरन सुखि यासों अटक्यो ता सुख आरी ॥९९॥
भठिआरिन समान माया परपंच सराय सँवारी।
नाना भाव देखावत पल–पल अपने तरफ़ निहारी ॥
मूरख सहित प्रमाद मगन मन होय लह्यो दुख भारी।
युगलअनन्यशरन सीतापति कृपा संग छुटकारी ॥१००॥
मनोराज दुख दाज सजत जब तब सब होश भुलावै।
ज्ञान ध्यान अभ्यास भास सब सहजहिं मांझ घुलावै ॥
जागृत स्वप्न उपाधित जे तव तुरिया झमक झुलावै।
युगलअनन्य अशोक अभय निज नाह अमूल मुलावै ।१०१॥

झांकत झुण्ड झुण्ड झांई झमकात झला झल झूले।
बामा वदन विलोकि विविधि विधि हाय हमेशे हूले॥
नाना रंग कुसंग अंग कटु कुसुम मलिन फलि फूले।
युगलअनन्य ज्ञान निर्मल लहि अवस नसैं सब सूले॥१०२॥
जैसी रुचि चित बीच विषय हित चलन सैन मधि दूनी।
वैसे ही सनेह सीतावर चरन सरोज अनूनी॥
पावै परमानन्द द्वन्द दलि विचल वासना सूनी।
युगलअनन्य सुवोध भजन विन करनी विपुल अलूनी॥१०३॥
सजग समाधि मांह दुख निध निज अंतराय ये सुनिये।
लव विक्षेप कखाय तिमिर तन्द्रादिक मन मधि गुनिये॥
इन सबके त्यागे विन सब कृत क्रिया कराया हुनिये।
युगलअनन्यशरन साधन विन बार-बार शिर धुनिये॥१०४॥
ज्ञान यथारथ स्वपर रूप पहिचान प्रधान कहावै।
मतवादी मत सदृश शरन करि नाना भाँति बतावै॥
अंत समय सिद्धान्त एकही समुझत भरम बहावै।
युगलअनन्यशरन सतपथ चलि परा प्रीति पद पावै॥१०५॥
पर ते पर ताते परतम सियराम स्वरूप प्रमानो।
नख प्रकाश परब्रह्म ज्योति मय व्यापक विश्व समानो॥
कला अंश आवेश ईश सब जे श्रुति वदहिं सुजानो।
युगलअनन्यशरन भ्रम परिहरि दिव्य ज्ञान उर आनो॥१०६॥
वर विज्ञान बोध इतनो निज निर्विकल्प चित करना।
पर तर तत्त्व हृदय दृढ़तर धरि चाह अचाह न धरना॥

सगुन अगुन अंगी संगीहूँ पहिरि प्रेम आभरना।
युगलअनन्यशरन अनयासहिं मिटे जनमना मरना ॥१०७॥
वृथा पचत जन लोक रंजना कारन विना विचारे।
निज स्वरूप अभ्यास करत नहिं पर स्वरूप जुत प्यारे॥
ताते सहत विविध दुख दारुन दीरघ रोग असारे।
युगल अनन्य सुबोध तर्क तृन तोम बहावत नारे ॥१०८॥
ज्ञान लच्छ पक वाच्य हिये धरू भली प्रकार निहारी।
मन बुधि विषय लीन परमातम लच्य ज्ञान अविकारी॥
ब्रह्मवाद बहु वकन वेद बल वाच्य ज्ञान दुखकारी।
युगलअनन्यशरन बाचक से जन्महिं मरहिं अनारी ॥१०६॥
दीपक अमल प्रकाश भये विनु तम क्यों बचन विनाशे।
अशन भांति बरनत बहुधा नहिं छुधा वेयाध निकाशे॥
चित्र अमर गो सुरतर से क्यों राव होत हिय भासे।
युगलअनन्यशरन याही विधि वाचक बचन विलाशे ॥११०॥
लच्य ललित लिय दिव्य बोध अविरोध सकल मतवालों से।
वाचक बिषे बिरोध बिकलपन व्याध आध हर हालों से॥
रंचक स्वाद नहीं सपनेहुं में बाद बिबाद बिहालों से।
युगलअनन्य लच्य अंतर अनुराग दिमाग रसालों से ॥१११॥
कनक कामनी कोट चहूँ दिशि घेरि रह्यो सब ठांई में।
पंडित वेष अशेष एक से एक पड़े उस खाई में॥
निकसे की कूँची मुशकिल क्यों पावे दिल कठिनाई में।
युगलअनन्यशरन उबरे तब जब सत सहस सहाई में ॥११२॥

कहने वाले लोग बहुत से दुनिये बीच दिखाते हैं।
बोध विगत वर मौज महा रस तीन काल नहि पाते हैं॥
शाहनशाह जवान कहें क्यों कोइ जग में हो जाते हैं।
युगलअनन्यशरन करनी बिन बार-बार विललाते हैं॥११३॥
करनी करे संत संवत सुचि सद्ग्रन्थन रुचि लीये।
जरनी जीव जाय वेशक इस रीति मोशक्कत कीये॥
मन मुखपना बिसारि भली विधि धरे सुगुरु वर हीये।
युगलअनन्यशरन इत उत की बानी भूलि न छीये॥११४॥
गिरि कंदर मसजीद मांझ नित करे आपना डेरा।
किसहीं से नहिं काम रती भर सुमिरन सांझ सवेरा॥
नामी नाम एकताई करि तजे विषम घन घेरा।
युगलअनन्यशरन ऐसी विधि भये न भव बन फेरा॥११५॥
जिस जा रहे गहे सोहवत संतोष मोहब्बत वालों की।
सुमिरन नाम अनाम अनामत कीजे शौक सवालों की॥
होय हमेश मगन मोहन मन मीत मांझ छबि वालों की।
युगलअनन्य नभूलि सजे संगत कबहीं मतवालों की॥११६॥
अमल करे हर समे इलम पर सो आमिल कहवावै।
खुदी गुजार अजार दफे कर मौज मोहब्बत लावै।
चोज चमक चातुरी चाल भजि भाव भेद दरसावै।
युगलअनन्यशरन हशमत रघुराज बिनाशक पावै॥११७॥
माते मधुर माधुरी मनहर मान मरोर वहावै।
राते सदा संत संगति सुख सार रहस्य समावै॥

नाते निखिल निरस नीचे करि शुद्ध स्वरूप समावै ।
युगलअनन्यशरन शुभ लच्छन सहित महंत कहावै ॥११८॥
कारन मूल स्वरूप ईश निज विदित वेद विद बानी ।
कल्पित कथन मात्र सूक्ष्म अस्थूल विवाद बयानी ॥
एक शरीर अचित चित घन वपु द्वितिय स्वरूप समानी ।
युगलअनन्यशरन श्रुति वरनत बहु विधि कलित कहानी ॥११९॥
आचारज की रीति वस्तु विस्तार समेत बषाने ।
जेहि सुनि गुनि आनंद मंद मन अज्ञ स्वपर पहिचाने ॥
भेदी जन जानहिं रहस्य तेहि हित सूक्ष्म अरुझाने ।
युगलअनन्यशरन बीजहिं बिच वृक्ष विभव अनुमाने ॥१२०॥
षटमत मधि सिद्धांत सिरोमनि ईश स्वरूप सम्हारन है ।
निज पर विषम विलास विविधि भव भान विशेष निवारन है ॥
मोद मिलत रंचक सपनेहुँ नहिं किये अमित मत धारन है ।
युगलअनन्यशरन ताते रस एक सुवस्तु बिचारन है ॥१२१॥
पंच कोश में आय आपहीं बंध्यो कीट सम सोई ।
समुझयो सरस स्वाद पहिले पुनि पायो दरद दगोई ॥
जौन समे निज भूलि हृदे प्रतिकूल समुझि सुचि होई ।
युगलअनन्यशरन वाही पल परम प्रमोद बनोई ॥१२२॥
मनहीं की कल्पित सिगरी संसार असार कहानी ।
किये विवेक नेक निकसत नहिं वरनहिं संत विनानी ॥
जिमि मन मधि बहु लसत पदारथ दरशत परष पछानी ।
युगलअनन्यशरन सतसंगति किये सुवस्तु देषानी ॥१२३॥

सियवल्लभ परतम प्रताप उर लाय अशंक हमेशे हैं।
राजा रंक समान गनै आतंक न हिय लवलेशे हैं॥
छाके सदा श्याम सुंदर रस विश्व विलास अनैसे हैं।
युगलअनन्य सुनाम धाम गुन गावत नित्य अभैसे हैं ॥१२४॥
वरविराग सत शीम सतत सब विश्व सीठ सम दरसे।
चाह अचाह जुगल ममता सें हीन परम पद परसे॥
राग द्वेष निःशेष रेष अविशेष देष गुन गरसे।
युगलअनन्यशरन अदाग तव दृढ़ विराग सुष सरसे ॥१२५॥
कंथा कटि कोपीन किये वैराग्य सुभाग्य न पावै।
जौ लौं मन माया छाया छल छिद्र छोभ नहिं जावै॥
होत कहा दुनियां रिझये जो बहु विधि स्वांग बनावै।
युगलअनन्यशरन अकामता विना न मुद मन छावै ॥१२६॥
अग जग जीव जिते भासत दृग तिते जुगल मय देखे।
द्रष्टा दर्शन दृश्य भेद तजि निज पररूप परेषे॥
राग द्वेष निःशेष वेष जुत दूर करे हिय मेषे।
युगलअनन्य ज्ञान उत्तम विज्ञान स्वरूप विशेषे ॥१२७॥
धुर भीतर का मरम ठेकाना मुरशिद मुझे लखाया।
जहाँ जाय दिल गर्क वर्क सम झलक अजूब चढ़ाया॥
आने की तकरार मिटी सब जान जहान भुलाया।
युगलअनन्यशरन आकिल कोइ कामिल कारक माया ॥१२८॥
दग्ध वीज ज्यों चित्र चारु तर जेवरी जरी देखावै।
पै नहिं कारज होत तासु ते रंचक नजर लखावै॥

अग जग राम रूप भासे तब शुद्ध वासना छावै ।
युगलअनन्यशरन भव निधि मधि बहुरि न गोता खावै ॥१२९॥
बचन मधुर अति अलप सत्य प्रिय संतत संत सुवानी ।
दुष प्रद असद अलाप ताप तजि लहे वस्तु विज्ञानी ॥
मिटे मलीन वासना निज मन मिलन महल मुद मानी ।
युगलअनन्यशरन रीझै सुख सागर सारँग पानी ॥१३०॥
साधन चार विचार सहित जब यथा योग जन साधे ।
वरनाश्रम आशक्ति भक्ति तजि परा प्रीति अवराधे ॥
मैं तैं तार तोड़ि तिरगुन तम भव भय विभव सुबाधे ।
युगलअनन्यशरन आसय सत समुझत अमल अगाधे ॥१३१॥
सारासार विचार हार हिय हरदम सजग सुधारे ।
आकस्मात चमत्कारी चित चौगुन चारु निहारे ॥
विजय करे कामादि कोटि खल मोह मान मन मारे ।
युगलअनन्यशरन सीतावर पावत प्रेम प्रचारे ॥१३२॥
हम तुम तरक तमाम खाम करि खलक रूप यों माने ।
अहि रजु सून्य सदन पिशाच रवि नीर सीप रजताने ॥
व्योम नीलता भास मनिन ज्यों चन्द्र द्वैत अनुमाने ।
युगलअनन्यशरन पूरब दिशि पश्चिम भ्रम भ्रम ठाने ॥१३३॥
ज्ञान भजन निर्वेद वेद विद वरनहि तत्व प्रधाना ।
तिनको फल अशनादि देह जड़ होय न मान गुमाना ।
लोक वासना निचय निरस विन कीन्हे प्रेम न आना ।
युगलअनन्यशरन विरले जन भेदी भेद सुजाना ॥१३४॥

निर्विकल्प सुष तल्प सैन करु परिहरु जागृत जाला।
देखो मौज महान निरंतर परमानंद रसाला॥
चरचा अपर बात फानी सम समुझै सतत उछाला।
युगलअनन्य विषय दिशि हेरत चौंकत चित्त विशाला॥१३५॥
विना बोध वैराग विमल मल थल रुचि दूर न होवेगी।
सुमति सोहागिनि स्वच्छ सरस सुष सेज न कबहूँ सोवेगी॥
महा मलीन वासना रजु जुत अद्भुत नीर न धोवेगी।
युगलअनन्यशरन मति पति विन वार वार सठ रोवेगी॥१३६॥
मलिन वासना असत अहं अध्यास उसास सनेही है।
पंच भूतमय देह धरे जेहि मिले निरंतर देही है॥
जैसे सूत सुलीन अमित मनि मनियां इमि गति गेही है।
युगलअनन्य विचारु ऐसेहीं संसृति कारन येही है॥१३७॥
छीन वासना तंतु होत चित आप विशेष विनाशे।
विशद बोध प्रद वेद शीश शुभ जो निशदिन अभ्यासे॥
जैसे शिसिर गये तुषार तर कैसेहुँ रंच न भासे।
युगलअनन्यशरन ऐसेहीं परम प्रमोद प्रकाशे॥१३८॥
कर्म ज्ञान दोउ हेत मोक्ष श्रुति सिद्ध रहस नहिं गोई।
अन्तःकरन कषाय हरन एक द्विति स्वरूप समोई॥
जिमि विहंग वर व्योम उड़त युग पत्र समेत सचोई।
युगलअनन्यशरन याही विधि कारन उभय बनोई॥१३९॥
सतचित मोद अर्थ अनुभव सत शास्त्र समेत सोहावन है।
अग जग में व्यापक सम सब विधि विषम न रंच सोचावन है॥

तीनों काल रहे एके रस सत्ता सरस सुभावन है ।
युगलअनन्यशरन सत गुन से अखिल पदारथ भावन है ॥१४०॥
चित चैतन्य चारु चरचा चल अचल सुचित करवावे हैं ।
भासमान जग जिनस जहाँ लगि ते ते भिन्न न भावे हैं ॥
शीकर मोद शिंधुहीं से सत कोटि लोक सरसावे हैं ।
युगलअनन्य लेश तीनो गुन सहित विनोद बढ़ावे हैं ॥१४१॥
सत चित आनंद रूप राम घनश्याम सुगुन पुनि जानो ।
गुन अरु गुनी एकताई सजि सोभा सुभग सजानो ॥
श्रीजानकी प्रान बल्लभ से भिन्न न ईश प्रमानो ।
युगलअनन्यशरन निर्मल निज नाथ निरंकुश मानो ॥१४२॥
मन मिलि सुषी भयो कोऊ नहिं अबहूँ ह्वैहैं नाहीं ।
मारवार को पथिक विकल ज्यों नीर विना तलफहीं ॥
जैसे नृपति हीन सेना दुष दारुन दशहुं दिशाहीं ।
युगलअनन्यशरन मानस संग सौगुन विपति समाहीं ॥१४३॥
मन बस करे सोइ सांचो सिरताज सूर अविनाशी ।
सनमुष ताकि शकत ताकत नहिं सुरपति आदि विलाशी ॥
विगत सकल संकल्प काम भव सहजहिं अमन उदाशी ।
युगलअनन्यशरन माया पुनि भई चरन रज दासी ॥१४४॥
सहस सुमेर फेर करते जो लेय उठाय प्रमानो ।
चपला पवन गहे निज मूठिन सोउ अचरज जनि जानो ॥
रवि शशि घेरि करै क्रीड़ा कोउ बाल सोऊ फुरमानो ।
युगलअनन्यशरन मन बश अति कठिन करन अनुमानो ॥१४५

सातो शिंधु सुपान करे अनयास बात इह सांची है।
चाहे पवि कठोर हालाहल भली भांति उर पाची है।
चाहे अखिल लोक पल अंतर फिरे न वैन असांची है।
युगलअनन्यशरन मन बस की बात सुनत मति नाची है ॥१४६॥
दृढ़ अभ्यास विराग विमल विनु मन नहिं जीतो जाई।
लगन लगाय रहे वासर बहु व्यथा बिकार बहाई॥
बातन की पकवान पाय नहिं होत उदर तृपताई।
युगलअनन्यशरन ऐसेहिं बिन करतब वचन बड़ाई ॥१४७॥
सो अति मूढ़ प्रमाद लिये जो बदत चित्त बस मेरे हैं।
चार दिना की चमक चांदनी आखिर रैन अंधेरे हैं॥
थोरेहीं अभ्यास अविधि करि मान गुमान अनेरे हैं।
युगलअनन्यशरन डरते रहु निश दिन सांझ सबेरे हैं ॥१४८॥
चपला चमक झमक झांइ जिमि पत्र नोक कन सोहैं।
कमठ भाल सम अंतर बाहर मन गति अगम सजो हैं॥
पल में मरत जियत पलहीं में दुष्ट सुभाव सदो हैं।
युगलअनन्यशरन सियवर की करुना पाय अमोहैं ॥१४६॥
हिंशा अकस देह ममतारत विगत बोध निज रूपा।
निंदा सहज स्वभाविक सबको राव रंक अरु भूपा॥
गति अति वक्र चक्र सम चंचल मति चलनी तजि सूपा।
युगलअनन्य तमो गुन पूरन वेद सुसंत निरूपा ॥१५०॥
चाह हमेश सुजस लौकिक हिय मान महत्व विशेषी।
दंभ कपटमय सकल सुकृत नहिं सांच चित्त दृग द्वेषी॥

बाद बिबाद विषाद रोज सब हृदे न शांति निमेषी ।
युगलअनन्य स्वभाव राजसी तजि के लखिय अवेषी ॥१५१॥
समता सार ग्रहन निर्मत्सर कशर न हृदे दृढ़ावै ।
सहजहिं सरल लगन नूतन जुत दंभ सजत सकुचावै ॥
धीर गंभीर पीर पर बोधक श्रुति मत सांच सोहावै ।
युगलअनन्यशरन विचार संपन्न सात्विकी गावै ॥१५२॥
सीताराम स्वरूप नाम गुन धाम रमन रस रंगी ।
विश्व विजाती संग विवर्जित सत समशेर सुनंगी ॥
विरह ब्याथा ब्यवहार यार दिलदार उछाह उमंगी ।
युगलअनन्यशरन निर्गुन निरलेप अछेप असंगी ॥१५३॥
पंच कोश भ्रम कोश तोशहर हरदम त्यागन जोगू ।
प्रथमहिं अन्न प्रानमय विवि पुनि त्रितिय मनोमय रोगू ॥
है तुरीय विज्ञान मोद मय पंचम कोश ससोगू ।
युगलअनन्यशरन याही मधि देह तीन कृत भोगू ॥१५४॥
जागृत स्वप्न सुषोपति पतिवर विश्व सुतैजस जानो ।
तीजे प्राज्ञ तज्ञता वरजित तीन अवस्था मानो ॥
तन अस्थूल शूक्ष्म कारन तिमि इनके संग पछानो ।
युगलअनन्यशरन त्रय शंतत व्यापक तुरिया मानो ॥१५५॥
पंची कृत सर भूत सुविरचित चौविश सहित सुथूला ।
दश इन्द्री मन मति प्रानन जुत शूक्ष्म वपु सम भूला ॥
अनिर्वाच्य सत असत अगोचर कारन तन निज भूला ।
युगलअनन्यशरन नाना भ्रम तजु भजु सरजू कूला ॥१५६॥

त्रिगुन मयी माया ते प्रथमहिं महत्तत्व प्रगटाना।
ताते अहंकार संभव सो तृविधि बदहिं वर ज्ञाना॥
तिनते पंचभूत इन्द्री मन आदि चारि सुरजाना।
युगलअनन्यशरन इतने बहु संभव जिनस जहाना॥१५७॥
हरदम मलिन विकार ओर ते चित्त निरोध सुबोधे।
दृढ़ अभ्यास खास रौशन दिल रूप भली विधि सोधे॥
मानामर्ष हर्ष तर्षादिक असत समाज सुजोधे।
युगलअनन्यशरन मन भ्रम विन उदय होहिं सुष पोधे॥१५८॥
सप्त भूमिका ज्ञान विमलवर विज्ञ विचित्र विकाशें।
शुभ इच्छा सुविचरन नामा तनु मानसा प्रकाशें॥
सत्वापत्ति चतूर्थी अभिमत दानि विभूति विभासें।
युगलअनन्य पांचवी अनुपम असंशक्ति का आसें॥१५९॥
छई भूमिका दिव्य पदार्थाभावनि प्रगट विराजी।
सतवीं सार स्वरूपा तुरिया छटा छबीली छाजी॥
अठवीं अनिर्वाच्य अनुपम अनुरागमयी रस राजी।
युगलअनन्यशरन सीतावर कृपा सुनौबत बाजी॥१६०॥
तीरथ अटन नटन हरि गुरु सुचि संत सुसेवा मांही।
श्रवन विमल गुन कथा कीर्त्तन करन सुचित्त उछाही॥
धर्म सुपथ पग धरन भली विधि अविधि विहाय अराही।
युगलअनन्यशरन शुभ इच्छा अमित रीत सरसाहीं॥१६१॥
सबसे विलग होय शंतत निज पर जग रूप बिचारे।
सारासार विवेचन करि सुचिसार हृदे अवधारे॥

विशद बोध बल्लभ सुसंत तिनकी संगति सुष धारे।
युगलअनन्यशरन सुबिचारन दूजी भूमि निहारे ॥१६२॥
मन सब दिशि से खैंचि भली विधि आतम माँह लगावै।
सोयो बहुत बासरन से तेहि विरति सुशब्द जगावै।
फैले हुवे शूल मन को अति सूक्षम खूब बनावै।
युगलअनन्यशरन तनु मानस रसा तीसरी पावै ॥१६३॥
धरनी तीन पीन होवत हिय प्रगट स्वरूप प्रकाशे।
देह गेह सम षेह अंड ब्रह्मण्ड मृषा भल भासे॥
नीर तरंग सुरंग वसन इव जीव शीव जग राशे।
सत्वापत्ति विमल भूमी सब काम कषाय विनाशे ॥१६४॥
शब्दादिक सब विषय विरस निज रूप सरस रति लागी।
आतम भिन्न नहीं रंचक कछु आतम रस सब पागी॥
सत चित धन आनंद ज्योति निज निर्मल जगमग जागी।
असंशक्ति भूमिका पांचवीं लहत कोऊ वड़भागी ॥१६५॥
अग जग जीव नजर आवत नहिं निजानंद मधि भूले।
ध्येयादिक विस्मरन मगन मन अमनुस फल फवि फूले॥
अनुभव गम्य दसा अद्भुत लहि अमल हिंडोले भूले।
युगलअनन्य पदारथाभावनि परम प्रेम अनुकूले ॥१६६॥
साखी तीन अवस्था मति गति पार अकहँ अति भीनी।
निराकार साकार रहित सुष सार स्वाद रस भीनी॥
है नाहीं जुग बीच विलच्छन संत जनन कहि दीनी।
युगलअनन्य तुरीया छिति कोउ गुर करुना से लीनी ॥१६७॥

पंच तत्व परपंच पछाने संत सनेही सांचे ।
एक एक में पांच पांच गुन महा दोष निधि नाचे ॥
व्योम वास नित श्रवन असित निज वरन शब्द गुन राचे ।
युगलअनन्यशरन भ्रम श्रम तजि नाम मोहब्बत माचे ॥१६८॥
शोक मोह अभिमान हान निधि राग द्वेष दुष दाता ।
कठिन कलंक रूप पांचो भल समुझै सब विधि ज्ञाता ॥
इनसे पार होय सज्जन तब लहे लषन गुरु भ्राता ।
युगलअनन्यशरन दृढ़ता निज निवहे निर्मल नाता ॥१६९॥
नाभी सदन निवास निरंतर मूलाधार अधारा ।
परस न गुन पुनि हरित वरन निज नाक बीच संचारा ॥
घटन वढ़न धावन संकोचन बहु बल धरन विचारा ।
युगलअनन्यशरन पांचो पवमान प्रकृत्ति निहारा ॥१७०॥
अनल वसत भ्रू मध्य खटक विन रंग अरुन निज न्यारा ।
रूप महा गुन सहित निरंतर जानहिं संत उदारा ॥
छुधा तृषा निद्रा तंद्रा दुति सहज स्वभाव सुधारा ।
युगलअनन्यशरन इनसे नहि भागे होत गुजारा ॥ १७१ ॥
नीर निवास हमेश शीश में योगी जन गति जाने ।
रस गुन सहित सुभग सीतल वर वरन स्वेत चित छाने ॥
स्वेद वीज लाला लोहू तिमि मूत अपूत पछाने ।
युगलअनन्यशरन पानी परकृति प्रपंच समाने ॥१७२॥
पृथिवी पीत वरन सुंदर गुन गंध करे जे वासा ।
रोम मांस नश नष अस्थी युत प्रकृति पांच परकाशा ॥

पर पच्चीश नदीश जीव सब डूबे दुसह दुराशा।
युगलअनन्यशरन विराग करि लीजे सु प्रभु हुलाशा ॥ १७३ ॥
पांचो भूत सुगुन पांचो मधि मिलत भिन्नता कीन्हे।
काया कठिन कलेश देश इह कर्म विवस मन दीन्हे ॥
आदि अंत मध्यस्थ महा मल षानि विवेकी चीन्हे।
युगलअनन्यशरन तन दिशि से अतिहिं उदासी लीन्हे ॥१७४॥
मुद्रा महा मोद मंदिर उन्मुनी धारिये प्यारे।
मन उलटन की रीति समुझि पुनि याके बीच विचारे ॥
मनो नाश वासना हान सद तत्व प्रकाश सम्हारे।
युगलअनन्यशरन सत संगति सजत सबल चित हारे ॥१७५॥
अनहद नाम मधुर धुनि सुनि नित मति गति अचल करावै।
निज स्वरूप अनुभवित सुरत करि तन तम ज्वाल जरावै ॥
अजपा नाम निरंतर सुमिरन करि चित चपल थिरावै।
युगलअनन्यशरन ध्यानहिं धरि अहं प्रवाह सिरावै ॥ १७६ ॥
संतत अमल अमंद आत्मा अंश सियावर जानो।
अपर रीति पथ नीति रहित गुनि तीन काल नहिं मानो ॥
विभु ब्रह्मांड मध्य जाकी नख प्रभा प्रगट पहिचानो।
युगलअनन्यशरन ईशान पति श्रीरघुपति अभिधानो ॥१७७॥
ऐसो अमल अनूप अलौकिक रूप कवन विधि भेंटे।
कठिन कलेश देश नाना मत सत अरु असत समेटे ॥
श्रीगुरु वचन नाम रसना रटि वाद विवाद सुमेटे।
युगलअनन्यशरन सिय पिय जिय अंतर नित लखु लेटे ॥१७८॥

षट चक्रन से पार सातवें सदन सोहावन राजे।
जहाँ सहज सुंदर धुनि निश दिन उपजत प्रिय तरताजे॥
नाम प्रताप प्रकाशत सो पर प्रेम प्रभा छवि छाजे।
युगलअनन्यशरन महरम जन जाने झीन अवाजे॥१७६॥
अजपा चार प्रकार संत जन भेदी भेद जनावे।
विरति बोध रति योग परा पुनि पंचम देस देखावे॥
असत अनित्य मनन तन मन नित अजपा विरति बतावे।
युगलअनन्य हंस सोहं वर बोध सुजप दरसावे॥१८०॥
अजपा योग दुरूह हृदे से पवन गवन मन माने।
द्वादस अंगुल वदन वाहिरे तिमि अंतर गति जाने॥
प्रनव अमल अभ्यास करे गुरु सुमुष अर्थ पहिचाने।
युगलअनन्यशरन कठोर पन छाड़ि सुभक्ति लोभाने॥ १८१॥
सर्वोपर सिरताज सिरोमनि वरन निरच्छर नेही।
आवत जात लषे पल पल पर तन मन सजे सनेही॥
युगल स्वरूप एकता करि नित धारे दृशा विदेही।
युगलअनन्यशरन सब विधि या मधि अनुराग निरेही॥१८२॥
स्वांसा सुभग रकार उचारत मधुर मकार हमेशे।
विना संत सतगुरु लखात नहिं यद्यपि निकट विशेसे॥
सत संगति के किये प्रकाशत अनुभव अमल सुदेशे॥
युगलअनन्यशरन संतन की करुना विवस परेशे॥ १८३॥
वानी परा उठाय प्रथम पुनि पश्यंती मधि लावै।
सने सने अभ्यास सहित मध्यमा माँझ सरसावै॥

बोध समेत वैखरी ते तिमि प्रगट सनेह सजावै ।
युगलअनन्यशरन चारो शुभ सदन संत श्रुति गावैं ॥ १८४ ॥
सूरति शब्द मिलाय नाम कोउ संत सिरोमनि सुमिरे ।
कोऊ कंज सीश अंतर निज नाम जपें भरि उमरें ॥
कोऊ संत सजग स्वांसा से सुमिरे तजि हम तुमरे ।
युगलअनन्यशरन कोऊ निज रोम रोम मधि झुमरें ॥१८५॥
कोऊ संत सुभग संवत सुचि प्रथम वैषरी भाषे ।
पुनि मध्यमा मधुर पश्यंती परा रहस रस चाषे ॥
ता पीछे ले जाय शीश पुनि रोम रोम अभिलाषे ।
युगलअनन्यशरन संतन के मत अनंत श्रुति साषे ॥१८६॥
बादी बाद बके नाहक नहिं नाम परत्व पछाने ।
परम परेश नाम महिमा बिन जाने मत अरुझाने ॥
नैन बंद कीन्हे कहो का सिधि दुनियां बहु रुचि ठाने ।
युगलअनन्यशरन संतन की रहस अकथ मन माने ॥१८७॥
रसना नाम रमें निश वासर कसर कदूरत कांठी ।
बसना बिबिधि कुसंग त्यागि करि दशा हृदे धरु गांठी ॥
कसना करन समन संतत तजि त्रिगुन तबीयत खाठी ।
युगलअनन्यशरन सियवर पुर बसना लहि सुष साठी ॥१८८॥
सम्प्रदाय सद्ग्रन्थ पंथ सब भाँति विचारा नीके ।
निकशा फकत सार तिन में सत सुमिरन नाम अफीके ॥
मन मति करन निरोध निरंतर कीजे हेत अमीके ।
युगलअनन्यशरन संतत सुष सब विधि खुशी गमी के ॥१८९॥

रे मन मीत बैठि गिरि कंदर बंदर पना बिसारी।
निरझर नीर पान निर्मल फल अशन सरस सुषकारी॥
वित वासना विहाय भली बिधि बाद बिबाद बिदारी।
युगलअनन्यशरन सीतावर नागर रट मन मारी॥१६०॥
हाय गयो दिन बीति विपुल विन सुमिरन अवध विहारी।
खाय लियो दुर्मति अंतर रहि बोध विचित्र विथारी॥
छाय रही चहुँ ओर अविद्या सेना सजग संवारी।
युगलअनन्यशरन सब विधि से आस एक धनुधारी॥१६१॥
रे मन मस्त रहा करु शंतत इत उत वृथा विलोके।
है तेरे अंतर अनूप अनमोल महा सुष थोके॥
तूं आपहीं बिचारु भली विधि और तोहि को रोके।
युगलअनन्यशरन प्यारे अब बसिये बिपिन अशोके॥१६२॥
वाती विमल विरति बटिके वर बोध सनेह सँवारे।
दिब्य दरद दुतिवंत दीप तेहि अंतर जोति उजारे॥
सीताराम स्वरूप प्रभा परत्यच्छ पाय उजियारे।
युगलअनन्यशरन कबहूँ नहिं भासे हृदे अधारे॥१६३॥
सीताराम स्वरूप बोध बिन अपर बोध दुख दानी।
जैसे कढ़ै न घीव कैसेहुं मथे कोटि विधि पानी॥
अर्क दूध के अर्थ पचत सठ तजि सुर गोरस षानी।
युगलअनन्य विमुख सिय पिय से भये कवन विधि ज्ञानी॥१६४॥
चित चंगा गंगा कठौत मधि सब बिधि समुझु सयाने।
घर में बाल बेहाल नगर में ढूंढत पांय पिराने॥

जैसे मृगा बास निज तन तजि षोजत बनहिं भुलाने।
युगलअनन्यशरन सुबोध से वस्तु समीप सोहाने ॥१६५॥
पढ़ि पढ़ि पचें मचे माया सों रचे न नाम सनेहा।
बचें न विषय बिबाद बाद बन बहकत फिरत सखेहा ॥
बोध निरोध नजीक नेक नहिं निंदा निरत सतेहा।
युगलअनन्यशरन समुझे बिन बृथा वितायो देहा ॥१६६॥
अहंकार जुत ज्ञान योग तप साधन सफल न होना है।
नाहक श्रम साधत बौरे तूं इसते बेहतर सोना है ॥
अहं बीज संसार दुखद तरु तिसी वासते खोना है।
युगलअनन्यशरन सुबोध दरयाय बीच कर धोना है ॥१६७॥
माने आप कछू जब लौं तब लौं नहिं नफा निशानी है।
खाक होय पद पाक पाइहैं श्रुति संतन की बानी है ॥
जान अजान सुजान जान बिन बूझो रहस कहानी है।
युगलअनन्यशरन उलटी गति कोउ विरले पहचानी है ॥१६८॥
जापै मेहर नजर हेरै सरकार उदार सिरोमन।
तिसहीं को प्रापत प्रकाश रस रास खास अधिरोहन ॥
निज करतब की आस वृथा सब भाँति स्वरूप तिरोहन।
युगलअनन्यशरन हिय अंतर करुना बीज विरोहन ॥१६९॥
ज्ञान समान नहीं दूजो सुष दुष दलि दूरि दुरावै।
अमित चोर जग जोर घोर बलवान सदाह चुरावै ॥
निज स्वरूप पर सहित भली विधि जीवन हृदे जुरावै।
युगलअनन्यशरन श्रम बिन भव बंधन तुरत तुरावै ॥२००॥

ज्ञान विहीन दीनताई केहि भांति हीन हो आवेगी।
परा प्रीति पहिचान ज्ञान बिन हुवे न प्रगट सजावेगी॥
श्रुति सिद्धांत भ्रांतहारी विन बोध अनर्थ समावेगी।
युगलअनन्यशरन प्रज्ञा प्रिय प्रेमा कबहुँ न छावेगी॥२०१॥
केवल निज आतम मय ज्ञानहिं संत सरस नहिं माने।
ताको फल समेत नीरस लषि निश दिन निंदा ठाने॥
जौन ज्ञान सुष षान प्रान सम जेहि मधि पर अभिधाने।
युगलअनन्यशरन सीतापति सहित महा मुद दाने॥२०२॥
योग कुयोग रोग तप आतप जप जल्पना जहानी।
बोध अबोध करम अकरम गुन औगुन मलिन मथानी॥
भाग अभाग अदाग दाग अनुराग अलाग गलानी।
युगलअनन्य विराग राग सम विन प्रीतम धनुपानी॥२०३॥
रंग अरंग सुसंग कुसंग समान सभय भव कारी।
मोद अमोद अशोक सशोक अलेप सलेप दुखारी॥
लाभ अलाभ अमोह समोह अलोभ सलोभ भिषारी।
युगलअनन्यशरन कुयोग सब रहित प्रीति धनुधारी॥२०४॥
वास विपिनि शुभ सुष्ट सत्वमय महा प्रमोद प्रदाता।
सहर निवास रजो गुन पूरन विषय विलास विधाता॥
वामा द्यूत राज सदनन विच रहे तमो गुन आता।
युगलअनन्यशरन निर्गुन सिय श्याम सदन सरसाता॥२०५॥
कारक कर्म अकाम सतोगुन सुभ कृत करत अकारन।
राजस उर संकल्प धारि करि कर्म करत सुष सारन।

तामस हिंसा द्रोह दाह हित कर्म करत भव धारन ।
युगलअनन्यशरन निर्गुन प्रिय प्रीति प्रतीत प्रचारन ॥२०६॥
पहर रैन से दिवस जाम लौ समे सतो गुन सोहन है ।
ता पीछे दिन मध्य दोपहर तामस गुन दुख दोहन है ॥
घटिका चारि रजो गुनमय पुनि बहु व्यापार अरोहन है ।
युगलअनन्यशरन याही विधि समुझो सुमति सुजोहन है ॥२०७
चिक्कन चारु सरस कोमल भल रुचि जुत अशन सतोगुन है ।
खट्टा मीठा और चरपरा विविधि अचार रजोगुन है ॥
कटु कठोर हिय दाह बढ़ावत तीच्छन सकल तमोगुन है ।
युगलअनन्यशरन सिय पिय उच्छिष्ट अगुन गुन सौगुन है ॥२०८
विधि हरिहर प्रपंच तीनों संमिलित होत नहिं न्यारा ।
ताते त्यागि तिहूँ आमय दृढ़ अगुन सनेह संवारा ॥
नीम प्रेम लय लीन मीन सम असम विहाय विहारा ।
युगलअनन्यशरन निर्गुन विन नहिं निश्चै निस्तारा ॥२०९॥
त्यागे प्रथम तमो गुन को रज सेवत चेतन प्रानी ।
पुनि परिहरे रजो गुन रजमय सेवत सत्व प्रधानी ॥
कछु दिन रमत सतोगुन मधि निज निर्गुन मिलन प्रमानी ।
युगलअनन्यशरन निर्गुन निज निर्मल श्रीधनु पानी ॥२१०॥
जपे जो नाम अकाम निरंतर जीह सवीह समेते ।
थोरेहीं दिन मध्य बध्य पन पार होय सुचि सेते ॥
सगुन उपाधि विलीन तीन पद पीन लहे सुख केते ।
युगलअनन्यशरन निर्गुन मन बसे विमल शाकेते ॥२११॥

अहंकार अति प्रबल महा रुज रोगन को सिरताजा ।
याके बीच बँधे सुर नर मुनि अमित रंक अरु राजा ॥
जे नहिं निकसि सके इह दुख ते भये सो अंतक खाजा ।
युगलअनन्यशरन करुना बल बचे कोई जन बाजा ॥२१२॥
चौबिश तत्व जनित भासत परत्यक्ष देह असथूला ।
अन्तःकरन करन दश पांचो तत्व विषय समतूला ॥
मन मति प्रान पंच इन्द्री दस सप्तक सूक्षम भूला ।
युगलअनन्यशरन कारन तन निज स्वरूप पर भूला ॥ २१३ ॥
आदिहिं भूलि गयो सोई तन कारन महा दुराशा ।
चौथो तन गये तीन नसत सुष लहत अनूप अनासा ॥
पंचम केवल देह जोतिमय वरनहिं संत सुदासा ।
युगलअनन्यशरन छठयो निज विग्रह परम प्रकाशा ॥२१४॥
हंस पारषत सषी सषादिक नाम तासु सत माने ।
मिलत महान कृपाल कृपा सें साधन विविधि विहाने ॥
चिन्मय मधुर परेश सदृश वपु भेद न रंचक स्याने ।
युगलअनन्यशरन सर्वस रस स्वाद तहां सरसाने ॥ २१५ ॥
सातो लोक पार ताहू पर पुनि तापर परधामा ।
जाको नाम ललाम सरस शाकेत अवध अभिरामा ॥
सदा अनादि सुथल सोई श्रीभरतवर्ष मधि वामा ।
युगलअनन्य अभेद जुगल जस जीवन सुमुनि सदामा ॥ २१६
धाम रहस्य अथाह दाह दुख दमन पनाह प्रदायक है ।
औरन की को कहे जहाँ आधेय आप रघुनायक है ॥

प्रगट गोय को मरम लषे रशिकेश भावना भायक है ।
युगलअनन्यशरन मेरो सब भाँति सुधाम सहायक है ॥२१७॥
सिय वल्लभ गुरु चरन सरोरुह संत समेत धेआई ।
वरनो विभव विवेक मोह दोउ अति संछेप सोहाई ॥
शुद्ध जीव प्रभु प्रेम हीन संकल्प सोई मन भाई ।
युगलअनन्यशरन चित मति अभिमान भेद तेहि गाई ॥ २१८ ॥
मन माया मिलि कपट निपट करि अच्छर दियो दवाई ।
देह गेह ममता मलीन मति करी विशेष अघाई ॥
जुगल वाम मन की प्रवृत्ति एक द्वितिय निवृत्ति सजाई ।
युगलअनन्यशरन तिनके परिवार अमित दरसाई ॥ २१६ ॥
आठ पुत्र मल मुत्र सरिस अपवित्र भये अति पाजी ।
एक सुता अद्‌भुता महा अपराधिनि दुख दल साजी ॥
ऐसे अधम मलीन तनय तन पामर वृत्ति समाजी ।
युगलअनन्यशरन इनके गुन वरनत सुमति न राजी ॥ २२० ॥
प्रथम मोह दुख दोह लोह सम सुवरन देत बनाई ।
दूजे मदन कदन कारन सुष संपति सुभग बड़ाई ॥
तीजे कोह अछोह अलापक विमुख सुपद रघुराई ।
युगलअनन्यशरन चौथो मल मूल लोभ अन्याई ॥ २२१ ॥
दंभ दरद दल खंभ अडिग दिल गाड़त अधम मलीना ।
गर्व सर्व अपराध निलय खर खर्व जर्व जिय दीना ॥
मद अति असद अयोग अगद गद हेतु वदहिं परवीना ।
युगलअनन्य अधर्म सहित ये आठ कुकाठ पसीना ॥ २२२ ॥

आठो सुवन महा दुरजय रन बोध टिकन नहिं पावै।
असत वासना सुता सकल परिवार पोषनी धावै॥
सत संगति सियवर करुना ते कोउ एक जन बचि जावै।
युगलअनन्यशरन इनके गुन समुझ बीच नहिं आवै ॥ २२३ ॥

मृषा दृष्टि दुष वृष्टि वाम सुत अहंकार बलवाना।
ममता बधू मोह नृप को परिवार धार भव नाना।
मदन तीय रति सुत लालच चय बधू लोलुपता माना॥
क्रोध नारि हिंसा असती अविचार सुवन दुख खाना॥
युगलअनन्य बधू याकी भव भूल शूल शत साना॥२२४॥

लोभ तिया तृष्णा तरुनी तम तापन भरी अनोषी।
जेहि घट उदय होय पापिनि तेहि सकल शोभ गुन शोषी॥
पाप तनय त्रिभुवन जाहिर तेहि सदृश नहीं कोउ दोषी।
चिंता वधू पापिनी सांपिनि डसत हृदे नित रोषी॥२२५॥

दम्भ वाम आसा असत्य सुत सबल विदित पाखंडा।
ताकी वधू अविद्या अघ गन मयी छयी ब्रह्मंडा॥
गर्व वाम निंदा अपजस सुत वधू अकीरति चंडा।
युगलअनन्यशरन दशहूँ दिशि इनकी सेन उदंडा॥२२६॥

इरखा मद तिय हिय आमय प्रद सुवन विरोध बहेरी।
असपरधा ताकी वामा बरजोर रचें भट भेरी॥
अधरम वाम असरधा सुत अति दुष्ट झूठ पग वेरी।
विषयाशक्ति वधू तिसकी जो वैरनि सब विधि मेरी॥२२७॥

इनमें अमित प्रकार भये परिवार न गनती आवै ।
एक एक सेनापति अति बलशालि निशान बजावै ॥
बड़े बड़े धीरज बालन को दांतन बीच दबावै ।
युगलअनन्यशरन मो सम तिन नजर लखे मर जावै ॥२२८॥
श्रीरघुबर अदया से संभव भयो जौन अज्ञाना ।
असत वासना ताहि बिबाही मोह भूप हरषाना ॥
दोउन मिलि जन्मे अनंत सुत करे सु कौन बषाना ।
आलस नींद अनर्थ कपट ब्याकुलता कुमत कुत्राना ॥२२९॥
लय विक्षेप भ्रष्टता जडता कृपिन भाव बहु ब्याधी ।
जन्मे एक एक पांवर अति प्रबल प्रपंच उपाधी ॥
जग मति सुता भईं चपला थिर होन न देत समाधी ।
युगलअनन्यशरन सतगुरु की करुना आस अराधी ॥२३०॥
मंत्री मोह चार बरधन बल सैन महा मतवारे ।
लै विक्षेप खेप चूरन करि असत संग अति भारे ॥
चौथो प्रबल जानु आलस जेहि सकल जीव हनि डारे ।
युगलअनन्यशरन मंत्री बिनु भूपति अवल विचारे ॥२३१॥
संगी मोह बिबिधि बाधक खल यंत्र मंत्र अभ्यासा ।
औषध मूल रसायनादि चित चाह कलंक दुराशा ॥
मोह हराम सजित सेना सब हरें बिबेक विलाशा ।
युगलअनन्यशरन सीतापति सुदया सहित हुलाशा ॥२३२॥
इनके रूप हमेश निहारत रहे प्रमाद विसारी ।
पावे अवस जीति इनके संग सत संगति अधिकारी ॥

साधन बोध उदय पल पल करि विषय वासना वारी ।
युगलअनन्य अशोच रहो नित सुमिरत अवध विहारी ॥२३३॥
मोह मलिन परिवार सुनत उर मधि उद्वेग विशेषी ।
ज्ञान ध्यान वैराग्य योग जस जानित न सेस असेषी ॥
महा प्रपंच रूप जानो ये सकल संत जन द्वेषी ।
युगलअनन्यशरन गाफिल पल भये दये सिर मेषी ॥२३४॥
सकल सुगुन सम्पन्न सुकुल निरवृत्ति श्रवन सुनि लीजे ।
नीके मनन निदिध्याशन करि प्रेम पियूषहिं पीजे ॥
मातु सुभाव समान उभय कुल सुदृढ़ हृदे निज कीजे ।
युगलअनन्यशरन मोहादिक वीज इन्हे मिलि छीजे ॥२३५॥
आविर्भाव बिबेक प्रथम आनंद स्वरूप प्रवीना ।
दूजे बस्तु विचार अलौकिक करे काम छल छीना ॥
तीजे सुत धीरज कोहज बहु वीरज हरत नवीना ।
युगलअनन्यशरन चौथो संतोष लोभ हरि लीना ॥२३६॥
पंचम सत्य दंभ नाशक पर रहस प्रकाशक सोहैं ।
सील सुभग षष्ठम गरूर गुन गर्व गिरावत गोहैं ॥
सप्तम धर्म अधर्म मान हर कुल मंडल झमको हैं ।
युगलअनन्यशरन विराग मद मलत आठवों जोहैं ॥२३७॥
साधन भक्ति सुता प्रगटी कुल पुष्ट करावनि हारी ।
सुनिये सब परिवार भार हर विमल बिबेक विचारी ॥
नृप बिबेक वामा विद्यावर ब्रह्म ज्ञान सुत भारी ।
वधू असंग अनन्य अमल मति कठिन कलंक निवारी ॥२३८॥

बिमल बिचार नायिका निश्चै सुमति सनेह सँवारी ।
सुवन नेम दृढ़ता पतनी जुत अद्भुत कला बिहारी ॥
धीरज वाम क्षमा सबला नित हने क्रोध ज्वर भारी ।
युगलअनन्य आर्जव सुत शुभ मुदिता बधू निहारी ॥२३९॥
सरस तोष जोषिता तृप्तितर पुत्र प्रमोद प्रधाना ।
करुना पुत्र वधू पावनि नित नाशे जरनि जहाना ॥
सत्य वाम साधुता सहज शुचि अकपट सुवन सुजाना ।
युगलअनन्यशरन जिज्ञासा वधू हरत भ्रम भाना ॥२४०॥
सील ललित ललना ब्रीडावर गुरु श्रुति मत अनुकूला ।
सुजस सुवन कीरति सुतीय सह समन करे सब शूला ॥
सुधरम बाम सरस श्रद्धा सुत परम प्रकाश अमूला ।
युगलअनन्य सुता सुवासना बधू साधुता तूला ॥२४१॥
निज निर्वेद नायिका उज्वल उदासीनता प्यारी ।
सुत अभ्यास वधू निस्पृहता सुता तपस्या सारी ॥
अष्ट पुत्र अभ्यास सबल यम नेमादिक हितकारी ।
युगलअनन्यशरन नाती वैराग्य सकल श्रम हारी ॥२४२॥
श्रीसीतापति कृपा अहेतुक जनित प्रेम सुष राशी ।
भक्ति विवाह दई तिनके संग राय विवेक विलाशी ॥
कुल कदंब के पुज्य भये प्रिय दंपति हृदे हुलाशी ।
युगलअनन्यशरन तिनके नव सुवन प्रताप प्रकाशी ॥२४३॥
श्रवन कीरतन कलित ललित सुचि सुमिरन स्वाद सुधामी ।
पद पंकज सेवन अर्चन बंदन सब विधि अभिरामी ॥

दास्य सरस सख्यत्व सार आतम निर्वेद न नामी।
युगलअनन्यशरन नौधा सुष सागर रमत अरामी ॥२४४॥
बरनी इहै निवृत्ति बिमल कुल सहित बिचार उदारा।
क्रमहीं ते मोहादि बिजय मधि कारन परम प्रचारा ॥
श्रीरघुपति प्रताप मानस धरि करे अखिल खल छारा।
युगलअनन्य प्रयास बिना भव निधि जब उतरे पारा ॥२४५॥
जहाँ ज्ञान तहँ भक्ति भली विधि जो पै होय सुरीती।
भक्ति समीप ज्ञान जोरे कर विलसति मोद सप्रीती ॥
ज्ञान भक्ति निर्वेद संग बिन सुरत न स्वाद पुनीती।
युगलअनन्यशरन नामहिं ते सहज मोद दल जीती ॥२४६॥
भूपति विशद विवेक सचिव सतसंग उमंग अनूपा।
दूजे दृढ़ अभ्यास एक रस स्ववस करत निज भूपा।
इनसे पूछि करे कारज सब मंगल लहे अभूपा।
युगलअनन्यशरन संतत निज पर ध्याइये स्वरूपा॥२४७।
भय सियराम विमुख पावत जन जाहिर जगत विलोकी।
होत नष्ट भव भ्रष्ट कष्ट प्रभु अभिमुख भये अशोकी॥
असद भावना हीन लीन मन मीन समान अलोकी।
युगलअनन्यशरन प्रीतम भजु त्यागि लालसा लोकी॥ २४८॥
मन जीते जग जीति लियो पुनि रही न चाह जहानी।
काम कर्म वासना वीज सब भस्म भये अभिमानी॥
खाली खलक खराव खाक सम जानि चुक्यो चित फानी।
युगलअनन्यशरन निशदिन शुभ सुमिरत सारंग पानी ॥२४९॥

सिय वल्लभ करुना कटाच्छ से बोध सोध सुष सरसे ।
काम कोह कलि कलिल काल कुल कबहूँ तोहि न गरसे ॥
धाम नाम अवलंब लिये हर घड़ी मोद रस वरसे ।
युगलअनन्यशरन भव वैभव हेत न कबहूँ तरसे ॥२५०॥
हौं तो अतिहिं अजान सिरोमनि ज्ञान कथन क्यों जानो ।
बुधि विद्या वल लेश नहीं निज नाम आस पहिचानो ॥
करनी काममयी मेरी सब सांची वदत प्रमानो ।
युगलअनन्यशरन सिय वल्लभ दिल दयालुता आनो ॥२५१॥
श्रीसरजू तट वास विमल रुचि सहित सकल सुष आगे हैं ।
चाह एक अंतर उर में कब राम रूप अनुरागे हैं ॥
बहु वासर सें सोय रही मति कछुक कछुक अब जागे हैं ॥
युगलअनन्यशरन सत संगति माझ रंच पन पागे हैं ॥ २५२ ॥

दोहा—ज्ञान कांति चित शांति भव भ्रांति हरत युत खेद ।
युगलअनन्यशरन कह्यो रहस संत वर वेद ॥ १ ॥ ४ ॥

इति श्रीमधुर मंजुमालायां श्रीयुगलअनन्यशरन विरचितायां दिव्य ज्ञान रहस्य निरूपनं नाम ज्ञान कान्ति चतूर्थः ।